लौहित्य साहित्य सेतु : सहयोगी व्यक्ति द्वारा समीक्षित अर्धवार्षिक द्विभाषिक ई-पत्रिका
वर्ष: 1, संख्या: 1; जुलाई-दिसंबर, 2020

आज का युग : अनुवाद का युग

डॉ॰ अच्युत शर्मा

अनुवाद निश्चय ही मानव-समाज के पुरातन साथियों में से अन्यतम है। मानव-समाज में जब से अभिव्यक्त वाणी के माध्यम से भावों एवं विचारों के आदान-प्रदान की व्यवस्था बनी, तब से अनुवाद-प्रक्रिया ने भी मनुष्यों का साथ हो लिया है और आज तो वह एक विश्वस्त साधन-साथी के रूप में मनुष्यों के पास खड़ी है।

ऐसे तो आज के युग को अलग-अलग आख्याओं से आख्यायित करने की रीति चल पड़ी है। कोई इसे विज्ञान-प्रौद्योगिकी का युग कहता है, तो अन्य कोई इसे मशीन-कंप्यूटर का युग बताता है, तो फिर अन्य कोई इसे सूचना-क्रान्ति के युग के रूप में चिह्नित करता है ।वर्तमान समय में कोरोना अतिमारी के संकट-काल ने तो आज के युग को डिज़िटेलाइज़ेशन के युग के रूप में दृढ़ता के साथ स्थापित कर दिया है। मानव-सभ्यता की निरन्तर प्रगति के साथ-साथ नयी-नयी बातें आती जाएँगी और समकालीन समय को नए-नए अभिधान मिलते जाएंगे। परन्तु, अनुवाद- जो कि मानव-समाज के सबसे पुराने साथियों में से अन्यतम रहा है, उसकी महत्ता और आवश्यकता वर्तमान समय में अधिक बढ़ जाने के कारण अगर यह कहा जाए कि आज का युग अनुवाद का युग है, तो यह आख्या सर्वथा संगत है। आज अनुवाद-विषयक चर्चाओं को और अलग-अलग क्षेत्रों में हो रहे व्यावहारिक अनुवाद के कार्यों को क्रमशः अधिकाधिक महत्व मिलता जा रहा है।

'मूल' शब्द के विपरीतार्थक शब्द के रूप में प्रचलित 'अनुवाद' शब्द के स्रोत में संस्कृत की 'वद्' धातु है- जिसका तात्पर्य है बोलना या कहना। इस 'वद्' धातु के पीछे 'घञ्' प्रत्यय जुड़ने पर 'वाद' शब्द बनता है, जिसका अर्थ है- जो बोला जाए अथवा जो कहा जाए। अब 'वाद' शब्द के पूर्व 'पीछे' या 'अनुवर्तिता' के अर्थ में 'अनु' उपसर्ग जोड़ने से शब्द बनता है- 'अनुवाद'। इस 'अनुवाद' शब्द का व्युत्पत्तिपरक अर्थ हुआ- जो पीछे या बाद में कहा जाए, यानी 'मूल' कथन के बाद उसके आधार पर कहा जाने वाला पश्चात्कथन ही 'अनुवाद' है। आज अनुवाद शब्द का जो अर्थ लोक-व्यवहार में प्रचलित है, उसका विकास इस रूप में माना जा सकता है- जो पीछे या बाद में कहा गया हो > एक व्यक्ति के कहने के बाद जो दूसरे व्यक्ति

द्वारा कहा गया हो > एक भाषा में कहने के पश्चात् जो दूसरी भाषा में कहा गया हो > स्रोत भाषा में कहने के पश्चात् जो लक्ष्य भाषा में कहा गया हो।

अनुवाद की व्यवस्थित परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है- मूल या स्रोत भाषा की सामग्री को निकटतम स्वाभाविक समानकों के जरिए लक्ष्य भाषा में पुनः अभिव्यक्त करना अनुवाद है। प्रसिद्ध भाषाविज्ञानवेत्ता डॉ. भोलानाथ तिवारी ने अनुवाद की परिभाषा इस प्रकार दी है-

> "एक भाषा में व्यक्त विचारों को, यथासम्भव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा में व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है।"
>
> (अनुवादविज्ञान, पृ. 17)

डॉ॰ जयन्ती प्रसाद नौटियाल ने अनुवाद को परिभाषित करते हुए कहा है-

> "स्रोत भाषा से लक्ष्य भाषा में किसी विषयवस्तु या सन्देश की समतुल्य अभिव्यक्ति अनुवाद है।"
>
> (अनुवाद : सिद्धान्त एवं व्यवहार, पृ. 22)

इन तीनों ही परिभाषाओं की मदद से अनुवाद के वास्तविक स्वरूप को बखूबी समझा जा सकता है। अंग्रेजी के 'ट्रान्स्लेशन' (Translation) शब्द के पर्यायवाची के रूप में 'अनुवाद' शब्द आज के भारतीय समाज में बहुप्रचलित है। इसे 'भाषान्तर', 'तर्जुमा' (तरजमा/तर्जमा), 'उल्था' आदि भी कहते हैं। असमीया में अनुवाद शब्द के अलावा 'भाङनि' शब्द भी प्रचलन में है।

अनुवाद निश्चय ही मानव-समाज के पुरातन साथियों में से अन्यतम है। मानव-समाज में जब से अभिव्यक्त वाणी के माध्यम से भावों एवं विचारों के आदान-प्रदान की व्यवस्था बनी, तब से अनुवाद-प्रक्रिया ने भी मनुष्यों का साथ हो लिया है और आज तो वह एक विश्वस्त साधन-साथी के रूप में मनुष्यों के पास खड़ी है। व्यक्त वाणी यानी भाषा के रूप में जिन क्षेत्रों में अभिव्यक्ति दी जाती है, उन सभी क्षेत्रों में आज अनुवाद की परिव्याप्ति हो गयी है। अनुवाद की इस सर्वव्यापकता एवं सर्वत्र उपस्थिति के कारण ही तो कहा जाने लगा है– 'आज का युग अनुवाद का युग है।'

एक ही समाज में भावों एवं विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषा की जरूरत होती है, परन्तु अलग-अलग भाषाओं के बोलनेवालों के बीच भावों एवं विचारों के आदान-प्रदान के लिए भाषान्तर या अनुवाद की आवश्यकता पड़ती है। वृहत्तर मानव-समाज एक-भाषी होने के बजाय बहु-भाषी है। उसमें 'बेबेल' यानी बहुभाषिकता की स्थिति अत्यन्त प्राचीनकाल से ही रही है। अतः शुरू-शुरू में भिन्न-भिन्न भाषाओं के बोलनेवालों के बीच बातचीत कराने के लिए ही अनुवाद-प्रक्रिया का श्रीगणेश हुआ होगा। परन्तु, ज्यों-ज्यों अलग-अलग मानव-समुदायों के पारस्परिक सम्बन्ध बढ़ते गए, मानव-सभ्यता का विकास होता गया, त्यों-त्यों अनुवाद-कार्य के क्षेत्र भी बढ़ते गए। बातचीत के अतिरिक्त धर्म-प्रचार, व्यापारिक सम्बन्ध की

स्थापना, साहित्यिक-सांस्कृतिक आदान-प्रदान, शिक्षा, प्रशासन, मनोरंजन, खेल-कूद, आर्थिक व्यवस्था, राजनीतिक व्यवस्था, विधि व्यवस्था, सूचना-तंत्र, भाषण-संभाषण इत्यादि सभी क्षेत्रों में अनुवाद-कार्य की परिव्याप्ति होती गयी । 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की संकल्पना से होते हुए 'ग्लोबल विलेज'(विश्व-ग्राम) की संकल्पना तक बढ़ते-बढ़ते अनुवाद-कार्य आज के जीवन का अभिन्न अंग बन गया है । अनुवाद-क्रिया आज के मानव-समाज के लिए अनिवार्यता बन गयी है।

अन्य क्षेत्रों की बात न भी करें और केवल साहित्य के क्षेत्र को ही लें, तो हम देख सकते हैं कि अनुवाद अत्यन्त प्राचीनकाल से ज्ञान-विज्ञान के साहित्य और सर्जनात्मक साहित्य दोनों ही संदर्भों में अतीव महत्वपूर्ण भूमिका निभाता चला आ रहा है। यहाँ हम कविता, गीत, कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, निबन्ध, रिपोर्ताज़, यात्रा-संस्मरण, जीवनी, आत्मजीवनी, आलोचना इत्यादि सर्जनात्मक साहित्य के विविध रूपों या विधाओं की बात करें, तो हम देखेंगे कि प्रत्येक विकसित भाषा में मौलिक साहित्य की धारा के साथ-साथ अनूदित साहित्य की एक धारा अनवरत प्रवाहित रही है । हिंदी में संस्कृत, अंग्रेज़ी, मराठी, बांग्ला, फारसी आदि ज्यादातर देशी एवं विदेशी भाषाओं में रचित चुने हुए उत्तम साहित्य का अनुवाद बराबर होता रहा है । चुनिन्दा असमीया साहित्य का भी हिंदी भाषा में अनुवाद हो चुका है और यह परम्परा अब भी जारी है । असमीया में भी संस्कृत, बांग्ला, मराठी, अंग्रेज़ी, रूसी आदि देशी एवं विदेशी भाषाओं में विरचित चुने हुए साहित्य का अनुवाद बराबर होता रहा है । पूर्वोत्तर की प्रमुख भाषा होने के कारण यहाँ की जनजातीय भाषाओं में रचित साहित्य के भी कुछेक अनुवाद असमीया भाषा में हो रहे हैं। हिंदी भाषा के साथ तो असम-निवासियों का एक रागात्मक संबंध असमीया, ब्रज और मैथिली के मिश्रण से बनी 'ब्रजावली' नामक कृत्रिम साहित्यिक भाषा के जरिए श्रीमन्त शंकरदेव के समय से ही बना हुआ है । अतः हिंदी के उत्तम साहित्य का अनुवाद असमीया भाषा में मध्ययुग से ही होता आ रहा है।

हिंदी और असमीया भाषाओं में विरचित साहित्य के आदान-प्रदान यानी पारस्परिक अनुवाद की परम्परा काफी समृद्ध है । अट्ठारहवीं सदी के आस-पास श्रीकान्त सूर्यविप्र ने आहोम राजा कमलेश्वर सिंह और महामंत्री पूर्णानन्द बुढ़ागोहाँइ से प्रोत्साहन पाकर महाकवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा विरचित 'रामचरितमानस' (भाषा हिंदी की एक बोली अवधी या पश्चिमी) के लंकाकाण्ड का असमीया भाषा में पद्यानुवाद प्रस्तुत किया था । यह कदाचित हिंदीतर भाषा में 'रामचरितमानस' के अनुवाद का प्रथम प्रयास था। अनुवादक सूर्यविप्र ने लिखा है, यथा-

भक्ततो उत्तम रामचरणर दास।

तुलसीदास ये नाम जगते प्रकाश ॥
पछिमा भाषाय सिटो ग्रंथ रामायण ।
नाना छन्दे प्रयत्ने करिला बिरचन ॥
तान भाषाकृत लंकाकाण्ड रामायण ।
पदबन्धे निबन्धिलो करिया यतन ॥

असमीया प्रेमाख्यानक काव्य-परम्परा के अन्तर्गत कवि रामद्विज द्वारा रचित 'मृगावती चरित' अथवा 'छाहापरीर उपाख्यान' और किसी अज्ञात असमीया कवि द्वारा रचित 'मधुमालती' नामक दो काव्य मिलते हैं, जिनके आधार हैं क्रमशः- कुतुबन द्वारा 1503 ई॰ में रचित हिंदी सूफी काव्य 'मृगावती' और मंझन द्वारा 1545 ई॰ में प्रणीत हिंदी सूफी काव्य 'मधुमालती'। इन दोनों काव्यों के अलावा पशुपति द्विज द्वारा बांग्ला-प्रभावित असमीया में रचित प्रेमाख्यानक काव्य 'चन्द्रावली' का आधार भी मध्ययुगीन हिंदी सूफी काव्य ही है। ये तीनों ग्रंथ यद्यपि हू-ब-हू अनुवाद नहीं हैं, परन्तु हिंदी से असमीया में होनेवाले काव्यानुवाद की परम्परा में ये अवश्य ही उल्लेखनीय हैं।

इसी परम्परा में आगे स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान 'मामा' की आख्या से प्रसिद्ध हिंदी-प्रेमी असमीया स्वतन्त्रता-सेनानी कृष्णनाथ शर्मा ने जेल-जीवन के दौरान तुलसीदास-कृत 'रामचरितमानस' का असमीया भाषा में पूर्ण अनुवाद किया। वैष्णव पंडित बापचन्द्र महन्त ने 'रामचरितमानस' का सम्पूर्ण असमीया-अनुवाद 1980 ई॰ में किया है। प्रकृति के सुकुमार कवि सुमित्रानन्दन पन्त की चुनी हुई कविताओं का असमीया-अनुवाद 'पन्त अरिहणा' नाम से असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा प्रकाशित हुआ है। फिर, जोनाराम हाजरिका ने 1996 ई॰ में बाबू जयशंकर प्रसाद द्वारा विरचित हिंदी महाकाव्य 'कामायनी' का असमीया-अनुवाद प्रस्तुत किया है।

हिंदी उपन्यासों का असमीया में अनुवाद भी काफी हुआ है। चित्र महन्त ने भगवती चरण वर्मा के चित्रलेखा', जैनेन्द्र कुमार के 'त्यागपत्र' और फणीश्वरनाथ 'रेणु' के 'मैला आँचल' का असमीया में अनुवाद किया है, तो डॉ॰ परेश चन्द्र देव शर्मा और रोहिणी कुमार ने प्रेमचन्द-कृत 'निर्मला' उपन्यास का असमीया-अनुवाद अलग-अलग रूप में प्रस्तुत किया है। निरुपमा फुकन ने प्रेमचन्द द्वारा रचित 'प्रतिज्ञा', सुमति तालुकदार ने धर्मवीर भारती-कृत 'गुनाहों का देवता', पुलिन बिहारी बरठाकुर ने भगवती चरण वर्मा-प्रणीत 'भूले-बिसरे चित्र', चक्रेश्वर भट्टाचार्य ने हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा विरचित 'वाणभट्ट की आत्मकथा' और तीर्थ फुकन ने 2009 ई॰ में भीष्म साहनी के 'तमस' नामक हिंदी उपन्यासों का सुंदर रूप में असमीया में भाषांतरण किया है। फिर, निर्मलप्रभा बरदलै ने अमृतलाल

नागर के प्रसिद्ध उपन्यास 'बूंद और समुद्र' का 'बिन्दु बिन्दु सिन्धु' नाम से और श्री बिपिन पाठक तथा डॉ॰ नगेन कलिता ने फणीश्वरनाथ 'रेणु' के 'मैला आँचल' उपन्यास का 'मयला आँचल' (2006 ई॰) नाम से असमीया भाषा में रूपांतरित किया है।

हिंदी कहानियों के असमीया-अनुवाद के सन्दर्भ में चित्र महन्त और माया देवी का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है । चित्र महन्त ने 'शतरंज के खिलाड़ी','मन्त्र','एकादशी' नामक तीन कहानी-संग्रहों में और माया देवी ने 'प्रेमचन्दर चुटिगल्प' शीर्षक कहानी-संग्रह के अन्तर्गत हिंदी के सर्वश्रेष्ठ कहानीकार मुंशी प्रेमचन्द की चुनिन्दा कहानियों का असमीया-अनुवाद प्रस्तुत किया है। शक्तिनाथ बरुवा ने महापंडित राहुल सांकृत्यायन के कहानी-संग्रह 'वोल्गा से गंगा' का असमीया अनुवाद 'भल्गार परा गंगा' नाम से 1968 ई॰ में प्रस्तुत किया है। उल्लेखनीय है इसी ग्रंथ का बड़ो-अनुवाद 'भोलगा निफ्रानी गंगा' नाम से हरिनारायण खाखलारी द्वारा प्रस्तुत हुआ है । जोनाली बरुवा द्वारा किया गया प्रेमचन्द, अज्ञेय, हरिशंकर परसाई और भीष्म साहनी की कुल बारह कहानियों का असमीया-अनुवाद 'सेतु' नाम से 2011 ई॰ में प्रकाशित हुआ है। महाप्राण 'निराला' की दस कहानियों और एक रेखाचित्र के गजेन्द्र नाथ दास द्वारा असमीया में अनूदित संकलन को 2020 ई॰ में 'परिवर्तन' नाम से प्रागज्योतिषपुर साहित्य सभा ने प्रकाशित किया है । निरुपमा फुकन ने जयशंकर प्रसाद के 'चन्द्रगुप्त' और हरिकृष्ण 'प्रेमी' के 'आहूति' नामक नाटकों का असमीया में अनुवाद किया है । डॉ॰ लक्ष्मीनारायण सुधांशु के प्रसिद्ध हिंदी समीक्षात्मक ग्रंथ 'काव्य में अभिव्यंजनावाद' का असमीया-अनुवाद डॉ॰ बिरिंचि कुमार बरुवा द्वारा सम्पन्न हुआ है। इस प्रकार हिंदी से असमीया में अनुवाद की परम्परा काफी समृद्ध रही है।

असमीया से हिंदी में अनुवाद की परम्परा और भी समृद्ध है । कविता, बरगीत, भक्तिकाव्य, पद्य में रचित अन्य ग्रन्थों के असमीया से हिंदी भाषा में अनुवाद की चर्चा करें तो महापुरुष श्रीमन्त शंकरदेव द्वारा विरचित 'चित्र भागवत' के हरिनारायण दत्तबरुवा द्वारा किए गए हिंदी-अनुवाद की बात सर्वप्रथम आती है। दत्तबरुवा एण्ड कंपनी ने 1949 ई॰ में इस भक्तिपरक ग्रंथ का प्रकाशन करके इस परम्परा का सूत्रपात किया। दत्तबरुवा द्वारा किया गया शंकरदेव-माधवदेव के बरगीतों का हिंदी-अनुवाद भी प्रकाशित हुआ । फिर, माधवदेव की अमर कृति 'नामघोषा' का हरमोहन दास द्वारा किया गया हिंदी-अनुवाद 1949 ई॰ में 'महापुरुष माधवदेव का नामघोषा' नाम से प्रकाशन-जगत में आया। 'नाम-घोषा' (डॉ॰ महेश्वर नेओग द्वारा संपादित) का ही सुरेन्द्रनाथ साहु द्वारा किया गया अन्य एक हिंदी-अनुवाद 'महापुरुष माधवदेव-कृत नाम-घोषा' नाम से असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा 1960 ई॰ में प्रकाशित हुआ। बिहगी कवि रघुनाथ चौधारी और पद्मश्री

नलिनीबाला देवी की चुनिन्दा कविताओं के लोकनाथ भराली और परेश चन्द्र देव शर्मा द्वारा किए गए हिंदी-अनुवाद 'कविश्री माला' शीर्षक के अन्तर्गत अलग-अलग रूप से 1962 ई॰ में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा की ओर से प्रकाशित हुए । फिर, अप्रमादी कवि माधव कन्दली द्वारा विरचित असमीया रामायण का नवारुण वर्मा द्वारा किया गया हिंदी-अनुवाद 'असमीया माधव कन्दली रामायण' नाम से 1976 ई॰ में भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ की ओर से प्रकाशित हुआ । चुनी हुई असमीया कविताओं का सम्पादन एवं हिंदी-अनुवाद चित्र महन्त ने 'असमीया कविता' नाम से किया, जो असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के सुप्रयास से प्रकाशन-जगत में आया। तत्पश्चात लखनऊ के भुवन वाणी ट्रस्ट ने श्रीमन्त शंकरदेव के अमर भक्ति-ग्रन्थ 'कीर्तन-घोषा' के नवारुण वर्मा द्वारा प्रस्तुत हिंदी में अनूदित रूप को 1986-87 ई॰ में 'श्रीशंकरदेव की कीर्तन-घोषा' नाम से प्रकाशित किया। 1988 ई॰ में बापचन्द्र महन्त द्वारा प्रणीत 'सामाजिक पटभूमि सहित असम के बरगीत' शीर्षक हिंदी-ग्रन्थ पाठक-वर्ग के बीच आया, जिसमें श्रीमन्त शंकरदेव और श्री श्री माधवदेव द्वारा विरचित बरगीतों के देवनागरी-लिप्यंतरण के साथ हिंदी-गद्य में प्रस्तुत भावानुवाद (भावार्थ) भी सन्निविष्ट हुआ । फिर, असम के महापुरुष डाक की पद्यात्मक उक्तियों के हेमरथ बर्मन द्वारा संकलित रूप 'डाकर बचन' नामक ग्रन्थ के नवारुण वर्मा द्वारा प्रस्तुत हिंदी-अनुवाद को 'डाक के वचन' नाम से असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति ने 1992 ई॰ में प्रकाशित किया। असमीया कवि गणेश गगै की काव्य-कृति 'पापरि' का राजेन्द्र प्रताप करन द्वारा प्रस्तुत हिंदी-अनुवाद भी इस सन्दर्भ में एक उल्लेखनीय प्रयास रहा है । बकुल चन्द्र बरा ने भी इस काव्य-ग्रन्थ का हिंदी-अनुवाद किया है। असम की एक जनजातीय भाषा कार्बि में रचित रामायण 'चाबिन आलुन' का देवनागरी-लिप्यंतरण एवं हिंदी-अनुवाद करके डॉ॰ देबेन चन्द्र दास 'सुदामा' ने यहाँ की अनुवाद-परम्परा को समृद्धि प्रदान की है। लखनऊ के भुवन वाणी ट्रस्ट ने इस ग्रन्थ को प्रकाशित किया है।

असमीया उपन्यासों का हिंदी भाषा में अनुवाद पर्याप्त मात्रा में हुआ है । इसकी एक सूची यहाँ प्रस्तुत है-

मूल कृति	मूल लेखक	अनूदित कृति	अनुवादक	प्रकाशक एवं प्रकाशन-वर्ष
मिरि जीयरी	रजनीकान्त बरदलै	मिरि बिटिया	युगजीत नवलपुरी	साहित्य अकादमी, 1959
पोहरर बाटत	प्रेम नारायण	रोशनी की राह में	सीता देवी	मणिमाणिक प्रकाशन, गुवाहाटी, 1962
आइ	बीरेन्द्र कुमार	माँ	लोकनाथ भराली	हिंदी प्रचारक पुस्तकालय,

	भट्टाचार्य			वाराणसी, 1963
शतघ्नी	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	शतघ्नी	गोपाल दास	नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 1964
मनोमती	रजनीकान्त बरदलै	मनोमती	लोकनाथ भराली	साहित्य अकादमी, 1964
डावर आरु नाइ	योगेश दास	बादल छंट गए	नवारुण वर्मा	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1976
प्रतिपद	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	प्रतिपद	शारदा बरुवा	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1977
चियेन नदीर ढौ	उमा बरुवा	सियेन नदी की लहरें	उमा बरुवा	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1977
सुरुजमुखीर स्वप्न	चैयद आब्दुल मालिक	सूर्यमुखी का सपना	लोकनाथ भराली	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1977
कका देउतार हाड़	नवकान्त बरुवा	बंधन	नवारुण वर्मा	राजपाल एंड सन्स, नई दिल्ली, 1979
मृत्युंजय	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	मृत्युंजय	कृष्णनारायण सिंह	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1982
नीलकंठी ब्रज	मामणि रयसम गोस्वामी	नीलकंठी ब्रज	रमानाथ त्रिपाठी	जनप्रिय प्रकाशन, नई दिल्ली, 1985
चाह संक्रांत एटि काहिनी	अरूप कुमार दत्त	चाय की कहानी	एल.एल. गुप्ता	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1986
कपिलीपरीया साधु	नवकान्त बरुवा	कपिली के आर-पार	लोकनाथ भराली	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया,1988
गङा चिलनीर पाखि	लक्ष्मीनन्दन बरा	गंगा चील के पंख	शारदा बरुवा	नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया, 1989
राजकुमार पक्खी घोंरा	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	पाखी घोड़ा	डॉ॰ महेन्द्र नाथ दुबे	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1990
मुनिचुनि पोहर	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	अँधेरा-उजाला	नवारुण वर्मा	किताबघर, नई दिल्ली, 1990
अघरी आत्मार काहिनी	चैयद आब्दुल मालिक	यायावर	सत्यदेव प्रसाद	साहित्य अकादमी, 1992
इयारुइंगम	बीरेन्द्र कुमार भट्टाचार्य	प्रजा का राज	डॉ॰ महेन्द्र नाथ दुबे	साहित्य अकादमी, 1994
अस्तराग	होमेन बरगोहाँइ	अस्तराग	डॉ॰ महेन्द्र नाथ दुबे	भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, 1996
आधालेखा दस्ताबेज	मामणि रयसम गोस्वामी	जिन्दगी कोई सौदा नहीं	नीता बनर्जी	सरस्वती बिहार प्रकाशन, 1996
पाताल भैरवी	लक्ष्मीनन्दन बरा	पाताल भैरवी	नीता बनर्जी	साहित्य अकादमी, 1996

इनके अलावा रजनीकान्त बरदलै के सामाजिक उपन्यास 'निर्मल भकत' का हिंदी-अनुवाद भी चित्र महन्त द्वारा प्रस्तुत हुआ है।

असमीया कहानियों एवं कहानी-संकलनों के हिंदी में अनुवाद की बात करें तो सबसे पहले उल्लेखनीय है शंकरलाल शर्मा द्वारा 1947 ई॰ में अनूदित एवं प्रकाशित 'माधुरी' नामक कहानी-संकलन जिसके मूल असमीया रूप (माधुरी) की रचयिता पदुमकुमारी गोहाँइ हैं। फिर, महिम बरा के कहानी-संग्रह 'काठनिबारी घाट' के नवारुण वर्मा द्वारा एक ही नाम से किए गए हिंदी-अनुवाद को नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया ने 1988 ई॰ में प्रकाशित किया। तत्पश्चात, रसराज लक्ष्मीनाथ बेजबरुवा द्वारा विरचित असमीया-किस्सों के संकलन 'बुढ़ी आइर साधु' के डॉ॰ अजीत कुमार दास द्वारा किए गए हिंदी-अनुवाद का प्रकाशन 1990 ई॰ में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति द्वारा 'दादी की कहानियाँ' नाम से हुआ। 1990 ई॰ में ही भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन की ओर से शीलभद्र द्वारा रचित कहानियों के 'अपराजेय' नामक संकलन के एक ही नाम से डॉ॰ महेन्द्रनाथ दुबे द्वारा किया गया हिंदी-अनुवाद पाठक-वर्ग के हाथों में आया। आगे भबेन्द्रनाथ शइकीया की कहानियों के संकलन 'सूर्यास्तर गान' के डॉ॰ महेन्द्रनाथ दुबे द्वारा 'ढलान की बेला' नाम से किए गए हिंदी-अनुवाद को 1995 ई॰ में भारतीय ज्ञानपीठ ने ही प्रकाशित किया। डॉ॰ निर्मलप्रभा बरदलै के सम्पादन में प्रकाशित 'असमीया गल्प संकलन' के नवारुण वर्मा द्वारा किया गया हिंदी-अनुवाद 'असमीया कहानियाँ' नाम से 1995 ई॰ में ही नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया द्वारा प्रकाशित हुआ। फिर, भबेन्द्रनाथ शइकीया द्वारा विरचित कहानियों के संकलन 'आकाश' के एक ही नाम से नवारुण वर्मा द्वारा किया गया हिंदी-अनुवाद नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया की ओर से 1996 ई॰ में प्रकाशन-जगत में आया। बिन्दु चौधुरी द्वारा किया गया बारह असमीया कहानियों का हिंदी-अनुवाद 'लोहित्य की लाली' शीर्षक के साथ 2005 ई॰ में असम लेखिका संस्था के सौजन्य से प्रकाशित हुआ।

कुछेक असमीया नाटकों का हिंदी-अनुवाद भी हो चुका है। प्रवीण फुकन द्वारा विरचित 'लाचित बरफुकन' नाटक के छगनलाल जैन द्वारा एक ही नाम से किया हुआ हिंदी-अनुवाद 1971 ई॰ में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से प्रकाशित हुआ है। फिर, प्रवीण फुकन द्वारा ही विरचित अन्य एक ऐतिहासिक नाटक 'मणिराम देवान' का मदनलाल खैतान द्वारा एक ही नाम से किया गया हिंदी-अनुवाद गोलाघाट जिला साहित्य सभा के सौजन्य से 1992 ई॰ में प्रकाशन-जगत में आया है। इनके अलावा रूपकोंवर ज्योतिप्रसाद आगरवाला द्वारा रचित 'शोणित कुँवरी' नाटक का हिंदी-अनुवाद एक ही नाम से तरुण आजाद के हाथों से सम्पन्न हुआ है।

अन्यान्य विधाओं की रचनाओं में राधानाथ फुकन द्वारा विरचित दर्शन-आध्यात्म-संबंधी पुस्तक

'आध्यात्म जगतर यात्रा' के निरुपमा फुकन द्वारा 'अध्यात्म जगत की सैर'नाम से किए गए हिंदी-अनुवाद को प्रागभारती प्रकाशन मण्डल, डिब्रुगढ़ ने 1957 ई॰ में प्रकाशित किया है । फिर, नीलमणि फुकन द्वारा विरचित समीक्षात्मक ग्रंथ 'साहित्य कला' के एक ही नाम से सुमति तालुकदार द्वारा किया गया हिंदी-अनुवाद 1958 ई॰ में असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की ओर से प्रकाशन-जगत में आया है । डॉ॰ बाणीकान्त काकति के निबंध-संकलन 'साहित्य आरु प्रेम' के चित्र महन्त द्वारा 'साहित्य और प्रेम' नाम से किया गया हिंदी-अनुवाद 1993 ई॰ में संजय बुक सेंटर, वाराणसी के सौजन्य से पाठक-वर्ग के हाथों में आया है । असम प्रकाशन परिषद की ओर से प्रकाशित रचना-समग्र 'ज्योति प्रसाद रचनावली' के 'ज्योति-प्रभा' नाम से देवी प्रसाद बागड़ोदिया द्वारा प्रस्तुत हिंदी में अनूदित रूप बंशीधर शिवभगवान, कलकत्ता के प्रयास से 1995 ई॰ में पाठक-वर्ग को मिला है । शंभुदत्त शर्मा द्वारा रचित 'पंच तीर्थ हाजो' नामक धर्म-संबंधी पुस्तक के 'शब्द-भारती' (हिंदी संसाधन केंद्र) की ओर से एक ही नाम से किया गया हिंदी-अनुवाद 2005 ई॰ में प्रकाशक पंकज शर्मा के प्रयास से पाठकों को प्राप्त हुआ है । इन सबके अलावा डॉ॰ बाणीकांत काकति द्वारा विरचित साहित्येतिहासपरक पुस्तक 'पुरणि असमीया साहित्य' का डॉ॰ नरनाथ भट्टाचार्य ने 'प्राचीन असमीया साहित्य' नाम से और लक्ष्मीनाथ फुकन की जीवनीमूलक पुस्तक 'महात्मार परा रूपकोंवरलै' का नवारुण वर्मा ने 'महात्मा से रूपकोंवर तक' नाम से हिंदी में अनुवाद किया है ।

इस प्रकार अनुवाद-प्रक्रिया के माध्यम से हिंदी और असमीया में पारस्परिक आदान-प्रदान की परम्परा काफी प्राचीन एवं समृद्ध रही है । इस लेख में उल्लिखित पुस्तकों के अलावा कुछेक और साहित्यिक एवं गैर-साहित्यिक कृतियों का भी पारस्परिक अनुवाद हो चुका है । पुस्तकों के अलावा छिटपुट रूप में भी पर्याप्त कविताओं, गीतों, कहानियों, निबंधों आदि का हिंदी-असमीया में पारस्परिक अनुवाद पाठक-वर्ग के बीच आया है । ऐसी सभी सामग्रियों का तथ्यपरक संग्रह आज की बड़ी आवश्यकता है, ताकि सही जानकारी प्राप्त हो और अनुवाद की पुनरावृत्ति से भी बचा जा सके । पूर्वोत्तर में हिंदी एवं असमीया में ही नहीं, अपितु असमीया और पूर्वोत्तर की अन्य भाषाओं तथा हिंदी और पूर्वोत्तर की अन्य भाषाओं के बीच भी पारस्परिक अनुवाद अत्यंत जरूरी है । हिंदी और पूर्वोत्तर की अन्य भाषाओं के बीच पारस्परिक अनुवाद के संदर्भ में असमीया एक सेतु के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकती है । ऐसे सभी अनुवाद-कार्यों से साहित्यिक समृद्धि आएगी, साहित्य का प्रचार होगा; साथ ही भावात्मक एकता मजबूत होगी और राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को बल मिलेगा । अनुवाद-कार्यों के परिणाम के रूप में हम 'सदा ही प्यारी मेरी भाषा-जननी' की भावना

के साथ-साथ 'एक हृदय हो भारत-जननी' की भावना से भी भर उठेंगे। सच ही आज का युग अनुवाद का युग है । अनुवाद करना, अनूदित सामग्री पढ़ना, अनुवाद-क्रिया के माध्यम से एक-दूसरे को जोड़कर 'वसुधैवकुटुम्बकम्' की संकल्पना को साकार करना हम सबका पुनीत कर्तव्य है।

ग्रंथ-सूची :

तिवारी, भोलानाथ. अनुवादविज्ञान. नयी दिल्ली : किताबघर प्रकाशन, 2007.

नौटियाल, जयन्ती प्रसाद. अनुवाद : सिद्धांत एवं व्यवहार. पहला. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2000.

शर्मा, सत्येन्द्रनाथ. असमीया साहित्यर समीक्षात्मक इतिबृत्त. प्रथम. गुवाहाटी : सौमार प्रिंटिंग एन्ड पब्लिशिंग कंपनी, 1981.

संपर्क-सूत्र
पूर्व-सहयोगी प्रोफ़ेसर एवं
पीएच.डी शोध-निर्देशक
हिंदी विभाग, गौहाटी विश्वविद्यालय, असम

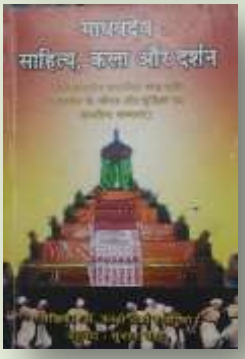

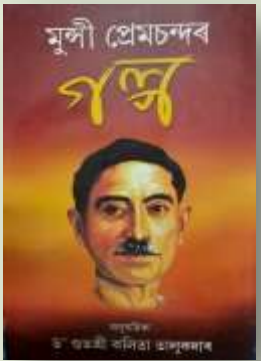

असमीया से हिंदी और हिंदी से असमीया में अनूदित कुछ कृतियाँ